वरुण

ई है मुम्बई नगरिया

वरुण ग्रोवर मुम्बई में रहते हैं। उन्होंने *ग्रेट इण्डियन कॉमेडी*, *ऐसी की तैसी*, *रणवीर* जैसे कई धारावाहिकों की पटकथा व संवाद लिखे हैं। फिलहाल वे *ज़ोर लगाके हैय्या* नाम की एक फिल्म के संवाद लिख रहे हैं। वरुण शहरों के खास अन्दाज़ को कैमरे में उतारने का शौक रखते हैं। उनके कैमरे से मुम्बई की कुछ झलकियाँ पेश हैं ...

दुकानदार सोया, खिलौनों का पहरा

शीर्षक ....

सड़क बनी ताल,
उसपे वालीबॉल!

शीर्षक ....

शीर्षक ....

रेडियो की आवाज़ ऊँची कर दी
ताकि नीचे तक सुनाई दे।

अक्खा धंधे का फण्डा, कभी गुब्बारा कभी झण्डा

ज़रा सँभल के ... न बॉल डूबे, न सूरज!

अमिताभ बच्चन के घर के सामने उनके "दर्शन" करने उमड़ी भीड़

शीर्षक लिखो, इनाम पाओ।
यहाँ तीन ऐसी फोटो हैं जिनका कोई शीर्षक नहीं है। क्या तुम्हें इनका कोई चटपटा शीर्षक सूझ रहा है?

मुम्बई में फैशन स्ट्रीट पर
गोपाल कृष्ण गोखले का स्मारक

मुम्बई गीत

सुनो रे भैया लाल-बुझक्कड़,
शहर ये कैसा अक्कड़-बक्कड़...
चलता जाए-चलता जाए,
इसके पाँव हमेशा चक्कर...
"बोले तो, मामू" भाषा ऐसी,
हर मुश्किल में आशा ऐसी,
टेंशन नक्को लेने का रे,
भले लाइफ भी मारे टक्कर!
सुनो रे भैया लाल-बुझक्कड़...
रंग बहुत हैं, ढंग बहुत हैं,
मुम्बई के परसंग बहुत हैं...
एक है किस्सा आम-आदमी,
जिसके साथ न सदा चाँदनी,
पर उसका भी हिस्सा का है,
नमक समन्दर हवा की शक्कर!
सुनो रे भैया लाल-बुझक्कड़...
और मुम्बई की मस्ती देखो,
बड़ी-बड़ी सब हस्ती देखो,
पर उनसे भी बड़ा शहर है,
बड़ी प्यास है, बड़ी लहर है,
प्यास लगे तो सब इक जैसे,
क्या राजा, क्या पीर, क्या फक्कड़...
सुनो रे भैया लाल-बुझक्कड़...

वरुण ग्रोवर

भीड़ों के बस रेले यहाँ, बोलो कोई खेले कहाँ